शुरू हुआ 'कृषि भारत-2024', सीएम ने किया उद्घाटन

यूपी में कृषि उत्पादन तीन से चार गुना बढ़ाने की संभावनाएं :योगी

■ एनबीटी ब्यूरो, लखनऊ : देश की कुल आबादी का 17% यूपी में है जबकि कृषि योग्य भूमि केवल 11% है लेकिन हम 20% अनाज का उत्पादन करते हैं। इसकी वजह है हमारे पास उपलब्ध जल संसाधन और उर्वरा भूमि की उपलब्धता। इसमें अब भी काफी संभावनाएं हैं। हम इस उत्पादन को तीन से चार गुना बढ़ा सकते हैं। यह बात सीएम योगी ने शुक्रवार को 'कृषि भारत-2024' के उद्घाटन के दौरान कही। कृंदावन कॉलोनी के मैदान में शुरू हुए चार दिवसीय 'कृषि भारत-2024' में उन्होंने कहा कि उत्पादन बढ़ाने के साथ ही जरूरी है कि लागत को कम किया जाए और अधिक से अधिक तकनीक का इस्तेमाल किया जाए। इसके लिए किसानों को जागरूक करना होगा और तकनीक को सबके लिए सुलभ बनाना जरूरी है। साथ ही कृषि को उद्यम के साथ जोड़ना होगा।

केमिकल फर्टिलाइजर का हो कम इस्तेमाल

योगी ने कहा कि किसानों को सूदखोरों के चंगुल से मुक्त करके स्वावलंबन की ओर बढ़ाने की दिशा में पिछले 10 साल में काफी प्रयास हुए हैं। अब भी और बेहतरी की गुंजाइश है। हमें बेहतर तकनीक का उपयोग करते कृषि क्षेत्र को आगे बढ़ाना है। देश के अंदर अलग-अलग राज्यों के अपने अनुभव हैं। हमें बेस्ट प्रैक्टिस को आपस में साझा करना होगा। उन्होंने कहा कि कृषि की लागत को कम करना, आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल और केमिकल फर्टिलाइजर पर निर्भरता को घटना एक चुनौती है। इसके लिए किसानों को जागरूक करना और उनको उद्यमिता से जोड़ते हुए व्यापक बदलाव की गुंजाइश है।

एग्रीकल्चर का पावरहाउस है यूपी

सीआईआई के अध्यक्ष संजीव पुरी ने कहा कि यूपी एग्रीकल्चर का पावरहाउस है। आधुनिक तकनीक इसमें सहायक सिद्ध होगी। कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने कहा कि कृषि उत्पादन बढ़ाने और प्रदेश को वन ट्रिलियन डॉलर इकॉनमी बनाने में यह आयोजन मील का पत्थर साबित होगा। आयोजन के पार्टनर कंट्री नीदरलैंड्स के उप कृषि मंत्री जेन वीस गीएट ने कहा कि भारत और नीदरलैंड्स में समन्वय के जरिए सभी चुनौतियों हल निपटा जा सकता है। आयोजन से पहले सीएम योगी और नीदरलैंड्स के प्रतिनिधिमंडल के साथ द्विपक्षीय वार्ता भी हुई। इस मौके पर दोनों देशों के बीच कृषि तकनीक आदान-प्रदान के लिए दो एमओयू भी हुए। आयोजन स्थल पर करीब 200 कंपनियों और संस्थानों ने प्रदर्शनी लगाई और बड़ी संख्या में किसान भी मौजूद रहे।

नई तकनीक से ला रहे हैं बदलाव

बिना मिट्टी, 1/4 लागत में उगा रहे पौधे

Zeeshan.Rayini@timesofindia.com

■ लखनऊ: शहरों में बढ़ते अपार्टमेंट कल्चर और सीमित भूमि में गार्डनिंग करना हर किसी के लिए संभव नहीं है। इंदिरा विवि के एक शिक्षक डॉ. अश्फाक ने एक ऐसा मॉडल ईजाद किया है, जिसमें बिना मिट्टी के पौधों को उगा सकते हैं। भारत सरकार की ओर से उन्हें इसके लिए पेटेंट भी मिला है। डॉ. अश्फाक ने बताया कि यह हाईड्रोपोनिक सिस्टम है। दुनिया के अन्य देशों में इस तकनीक से जहां खेती हो रही है, वो बहुत खर्चीली है। इस तकनीक को भारत के हिसाब से तैयार किया गया है, जिसमें सामान्य पाइप और पंप की मदद से ₹9 हजार से ₹12 हजार की लागत में घर की गार्डनिंग के लिए इसे तैयार किया जा सकता है। इसमें पानी के माध्यम से ही सॉल्ट की मदद से हम पौधों को जरूरी पोषण पहुंचाते हैं। इसे फ्लैट की बालकनी तक में लगाकर पौधे उगा सकते हैं। खासबात ये है कि इसे अगर बड़े स्केल पर लगाया जाए तो मिट्टी से कम लागत में खेती की जा सकती है।

विधान सभा में मंगवाए बिस्किट

प्रदर्शनी में आए मीरजापुर के किसान अखिल मौर्या ने मिलेट्स के बिस्किट, नमकीन और अन्य बेकरी प्रॉडक्ट तैयार किए हैं। अखिल ने बताया कि हम बिना गैरे के यही टेस्ट मिलेट्स से दे रहे हैं। इसमें ज्वार और बटर बिस्किट का स्वाद एक बार मीरजापुर में सीएम योगी ने एक प्रदर्शनी में चखा। इसके बाद विधानसभा के लिए उनके उत्पाद को मंगाया गया। अखिल रागी, ज्वार और बाजरा समेत कई अन्य मोटे अनाज से उत्पाद बना रहे हैं।

ड्रोन से हो रही फसलों की मॉनिटरिंग

यूपी में किसानों की फसलों को मॉनिटरिंग ड्रोन से की जा रही है। आयोटेक की ओर से प्रदेश सरकार के कृषि विभाग के साथ मिलकर इसे चलाया जा रहा है। इसके

रिसर्चर अभिमन्यु ने बताया कि हम 19 जिलों में काम कर रहे हैं। यहां हम ड्रोन से फसलों की मॉनिटरिंग कर रहे हैं। इसमें अगर किसी इलाके में फसलों में कोई बीमारी या कीट आ रहा है तो विभाग को बताते हैं और मुफ्त में ड्रोन से ही हम कीटनाशक का छिड़काव भी करते हैं। प्रदर्शनी में सलाम किसान नाम की एक संस्था ने भी ऐसी सेवा महाराष्ट्र में शुरू की। यहां किसानों को ₹600 प्रति एकड़ की न्यूनतम शुल्क पर ड्रोन से फसल पर छिड़काव की सुविधा बता रहे हैं। इसे यूपी में भी शुरू संस्था की ओर से शुरू करने की कवायद की जा रही है।

बढ़ा रहे फल व सब्जी की सेल्फलाइफ

प्रदर्शनी में गामा इरैडियेशन प्लांट का भी एक मॉडल लगाया गया है, जिसमें गामा किरणों से फसलों की सेल्फ लाइफ को दोगुना तक किया जा सकता है। कंगनी के बॉबी अरोरा ने बताया कि अभी आलू और प्याज को छह महीने तक रखा जा सकता है। गामा किरणों से ट्रीट करने के बाद इसकी सेल्फ लाइफ एक साल तक बढ़ाई जा सकती है। आलू प्याज के अलावा अन्य फल सब्जी, दालें, धान, गेहूं समेत अनाज को भी अगर गामा ट्रीटमेंट दिया जाए तो उसे लंबे समय समय बिना घुन व कीड़ा के सुरक्षित रखा जा सकता है। लखनऊ में हम जल्द ही इसका प्लांट शुरू करने जा रहे हैं।